भगत कबीर – सबद २६

जा कै हरि सा ठाकुरु भाई ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२८

जा कै हरि सा ठाकुरु भाई ॥
मुकति अनंत पुकारणि जाई ॥१॥
अब कहु राम भरोसा तोरा ॥
तब काहू का कवनु निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥
तीनि लोक जा कै हहि भार ॥
सो काहे न करै प्रतिपार ॥२॥
कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥
किआ बसु जउ बिखु दे महतारी ॥३॥२२॥

सार: आंतरिक स्वायत्तता तब विकसित होती है जब हमारे आत्म-मूल्य और निर्णय लेने की क्षमता, बाहरी स्वीकृति, सुरक्षा और मान्यता के प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं। यह आज़ादी कोई दूर का लक्ष्य नहीं बल्कि स्वयं से सच्चे जुड़ाव से मिलने वाली, समृद्ध आंतरिक स्थिति है। निजी अनुभवों पर आधारित इस आत्मविश्वास को बढ़ाकर, हम अपने भीतर मौजूद उस जीवंत और सर्वव्यापी चेतना से जुड़ते हैं। आंतरिक स्थिरता पर टिकी ऐसी स्वायत्तता को अपनाकर, हम अपनी अंतरात्मा और मूल्यों के अनुसार जीवन जीने और सार्थक फ़ैसले लेने में सक्षम बनते हैं।

जा कै हरि सा ठाकुरु भाई ॥
जिसके लिए सर्वव्यापी सत्य ही सुखद स्वामी बन गया है। यह उस परम मिलन को दर्शाता है जहाँ एकत्व ही जीवन का मुख्य सिद्धांत बन गया है।

मुकति अनंत पुकारणि जाई ॥१॥
शाश्वत मुक्ति पुकारती है। यह मुक्ति को बाहरी लक्ष्य के रूप में पाने के बजाय, आंतरिक सामंजस्य से प्राप्त होने वाली आंतरिक अवस्था के रूप में प्रकट करता है। (१)

अब कहु राम भरोसा तोरा ॥
अब मैं कहता हूँ कि मेरा भरोसा उस सर्वव्यापी एकता पर है। व्यक्तिगत अनुभवों से उपजा यह विश्वास, भीतर मौजूद जीवंत और सर्वव्यापी चेतना पर निर्भरता को दर्शाता है।

तब काहू का कवनु निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥
तब किसी और से एहसान या समर्थन क्यों माँगा जाए? यह आंतरिक स्वायत्तता को दर्शाता है जिसमें बाहरी स्वीकृति, सुरक्षा या मान्यता की ज़रूरत हमारे विचारों या कर्मों पर हावी नहीं रहती। (१)(विराम)

तीनि लोक जा कै हहि भार ॥
तीनों लोकों को एक सर्वव्यापी व्यवस्था संभालती है। यह ब्रह्मांडीय पालन-पोषण का प्रतीक है जहाँ अस्तित्व की हर परत उस ऊर्जा का हिस्सा है जो बिना किसी भेदभाव या तनाव के जीवन को सहारा देती है।

सो काहे न करै प्रतिपार ॥२॥
फिर वह सार्वभौमिक व्यवस्था सहारा क्यों नहीं देगी? यह सवाल हमें यह समझने के लिए प्रेरित करता है कि अगर प्रकृति के नियम सबके लिए एक जैसे हैं तब वह प्रत्येक व्यक्ति पर समान रूप से लागू क्यों नहीं होंगे, चाहे उसकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। (२)

कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥

कबीर कहते हैं कि उस एक समझ पर विचार करें। यह उस सच्चाई की ओर इशारा करता है कि हमारी आंतरिक सोच, बाहरी परिणामों को प्रभावित करती है और उस मूल एकता की पुष्टि करती है जिसमें हर क्रिया और प्रतिक्रिया आपस में जुड़ी हुई है।

किआ बसु जउ बिखु दे महतारी ॥३॥२२॥

अगर माँ ही ज़हर दे दे तब बच्चे का क्या बस चलता है? यह बताता है कि अगर हमारे इरादों को पोषित वाले विचार ही नकारात्मक हों तब हमारे कर्म उन ज़हरीली मानसिक प्रवृत्तियों को कैसे पार कर सकते हैं? (३)(२२)

तत्त्व: भगत कबीर प्रभावशाली ढंग से बताते हैं कि हमारा आंतरिक संवाद सीधे तौर पर हमारे बाहरी अनुभवों को आकार देता है। हमारे मन में उठने वाले विचार और हमारे काम, हमारे सोचने के तरीक़े को दिखाते हैं। यह समझ हमें बताती है कि हमारे अंदर और बाहर की दुनिया आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं, यह कारण और प्रभाव का ऐसा जाल बनाती हैं जो हमारे जीवन पर असर डालता है। सोच-विचार करके और अपने अनुभवों से सीखकर, हम उस मूल सत्य को जान सकते हैं जो पूरी दुनिया को एक साथ जोड़े रखती है। प्रकृति के नियम सबके लिए एक जैसे हैं और बिना किसी भेदभाव के हर व्यक्ति पर लागू होते हैं, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। यह समझ हमें अपने जीवन में सार्थक बदलाव लाने की शक्ति देती है ताकि हम अपने आस-पास की दुनिया के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ सकें।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com